हमारे अनुभव से ब्रह्मा बाबा

शक्तिशाली पालना, अविचल स्नेह और दिल को हमेशा के लिए पुलकित करने वाला भाव, दृश्य, अदृश्य शक्तियों का सम्पूर्ण समावेश और उसका जीवंत अनुभव परमात्मा की परछाई और उस परछाई में सम्पूर्ण अलौकिकता का अनुपम, अवर्णनीय, अकल्पनीय मिसाल अगर कोई है, तो वो हैं हमारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। उनके जीवन परिवर्तन का अनुभव हम अपने जीवन परिवर्तन से तुलना करके देखेंगे आज.....

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

दुनिया में जब किसी व्यक्ति के बारे में बात होती है, तो सबके मुख से निकलता है, अच्छा! वो कैसे थे, कैसे चलते थे, कैसे बोलते थे, कैसे कपड़े पहनते थे, कैसे उठते थे, कैसे बैठते थे, अर्थात् सब किसी के भी चरित्रों का वर्णन करते, ना कि चित्र का। लेकिन यह अलौकिक मानव जो कि इस सृष्टि का आदि पिता है, उनका चित्र और चरित्र दोनों अविश्वसनीय है। कहा जाता है कि स्मृति शरीर की नहीं होती, लेकिन चरित्र के विशेषताओं की होती है। ब्रह्मा की सबसे पहली विशेषता यही थी कि उन्होंने पहले स्वयं के शरीर की स्मृति नष्ट की, उसके बाद औरों की। एक बहुत सुंदर कहावत है कि 'सफलता की पोशाक कभी तैयार नहीं मिलती, इसे बनाने के लिए मेहनत का हुनर चाहिए।' इसी का सम्पूर्ण उदाहरण हमारे ब्रह्मा बाबा हैं, जिन्होंने लगभग 37 साल तक इस देह रूपी पोशाक को उतारने का अभ्यास किया, ताकि सब लोग उनसे उस स्मृति से ना मिलें जो किसी को देखकर होता है। जैसे मनुष्य जीवन में आप किसी को याद करते हैं, तो सामने देह आती है, देह के सम्बन्ध के कारण दु:ख महसूस होता है या सुख महसूस होता है। लेकिन जब ब्रह्मा बाबा की स्मृति हम सबको आती है, तो हमें वो स्मृति और ज़्यादा शक्तिशाली बना देती है। परमात्मा ने ब्रह्मा बाबा की विशेषताओं को इतने सुंदर तरीके से हम सबके सामने रखा कि आज हम उसको पढ़कर भी उनको साकार रूप में अपने सामने देख सकते हैं। ब्रह्मा पिता के हर कदम में विशेषताएं थीं, संकल्प में भी सर्व को विशेष बनाने का उमंग उत्साह था। वृत्ति द्वारा हर आत्मा को उमंग उत्साह में लाना, वाणी द्वारा सदा हिम्मत दिलाना, ना-उम्मीद को उम्मीद में ला देना, निर्बल आत्मा को सबल बना देना, हर बोल जिनका अनमोल था, मधुर था, युक्तियुक्त था, ऐसे बच्चों के साथ हर कर्म में साथी बन कर्मयोगी बनाया। उनका पहला स्लोगन था, जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। बाल से बाल रूप में मिले, युवा से युवा रूप में मिले और बुज़ूर्ग से बुज़ूर्ग रूप बन सदा आगे बढ़ाया। उन्हें वैसा ही अनुभव कराया जैसा वे करना चाहते थे। उनसे जो भी मिला है, आज भी उनसे उनका अनुभव पूछो तो वो यही कहते हैं कि बाबा मुझे बहुत प्यार करते थे। सभी समझते थे कि बाबा सिर्फ मेरा है। यह थी बाबा के सम्पर्क सम्बन्ध की सबसे बड़ी विशेषता। बाबा सर्व के प्रति शुभचिंतक रहते थे।

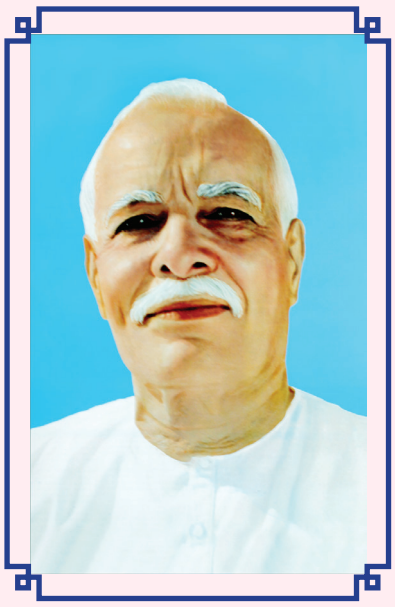

ब्रह्मा, ब्रह्मा कैसे बने, अगर इसको कुछ शब्दों में समेटा जाये, तो वो था पहला कदम हिम्मत का, जिसने उन्हें पदमापदम भाग्यवान अनुभव कराया, वो था सब बातों में समर्पणता। सबकुछ समर्पण कर दिया, कुछ नहीं सोचा क्या होगा कैसे होगा। एक सेकेण्ड में तन को समर्पित किया, मन को समर्पित किया, धन को भी समर्पित किया, बिना ये सोचे कि आगे क्या होगा! ऐसे ही सम्बन्ध को भी समर्पण किया, लौकिक को अलौकिक सम्बन्ध में बदला, उन्हें छोड़ा नहीं, उनका भी कल्याण किया, परिवर्तन किया। मैं-पन की बुद्धि, अभिमान की बुद्धि, पद-प्रतिष्ठा की बुद्धि, सबकुछ परमात्मा के आगे समर्पित कर निखालस बन गये। इसीलिए शायद उनके तन से, मन से, बुद्धि से सबको शीतलता का अनुभव होता रहा, क्योंकि वो किसी के नहीं, सभी के हो गये और इस दुनिया में भी लोग उसी को सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं जो सभी का है, डिटैच है, अलग है, अनोखा है। तो ऐसे प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हम बच्चे जो इस ब्रह्माकुमारी संस्थान को सबके सामने रीप्रेज़ेंट करते हैं, हमें भी इस स्मृति दिवस पर उनके समान बनने का दृढ़ संकल्प लेकर स्नेह और प्यार का रिटर्न देना है। बाप समान बनना है, वही सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जो हमें औरों के लिए प्रेरणास्रोत बनायेगी।

सामने

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

मुम्बई-घाटकोपर-I बाल दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी बच्चों को सर्टीफिकेट व ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. नलिनी दीदी।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: शंकर का बड़ा ही विलक्षण स्वरूप दिखाया है, देह पर सर्प, राख लपेटे हुए, मस्तक पर चन्द्रमा व सिर से बहती गंगा, हाथ में डमरू व साथ में त्रिशूल। कुछ अटपटा सा लगता है। क्या शंकर ऐसे हैं?

उत्तर: वास्तव में शंकर का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। वे यादगार हैं, वे प्रतीक मात्र हैं उन महान तपस्वियों के, जिन्होंने ज्ञानेश्वर व योगेश्वर शिव के द्वारा सिखाये गये राजयोग की साधना की। उनकी देह पर विभिन्न वस्तुओं का दिखाया जाना आध्यात्मिक मर्म लिए हुए है। ध्यान दें - जिन्होंने विकारों रूपी विषधरों को अपने गले की माला बना लिया अर्थात् विकारों को वश कर लिया, जिनका चित्त चन्द्र की तरह शीतल हो गया, जिनकी बुद्धि से निरंतर ज्ञान की गंगा बहती रही अर्थात् जो ज्ञान स्वरूप हो गये, वे ही महान तपस्वी बने। इसलिए ग्यारह रूद्रों का गायन है, वे निरंतर अशरीरी बन गये, इसलिए उन्हें नग्न दिखाते हैं, वे ज्ञान डांस करने लगे, अतीन्द्रिय सुख में झूमने लगे, तीनों कालों व तीनों लोकों के ज्ञाता बन गये, इसलिए उन्हें डमरू व त्रिशूल दिया है। तो, ये ब्रह्मा-वत्सों की बाप समान स्थिति का प्रतीक है।

प्रश्न: मैं एक डायरेक्ट प्रश्न आपसे पूछता हूँ - क्या आपने भगवान को देखा है?

उत्तर: हम भी डायरेक्ट उत्तर दे रहे हैं..हाँ...एक बार नहीं बार-बार और उनसे ऐसा दिव्य नेत्र भी प्राप्त कर लिया है कि जब चाहें उन्हें देख लें और केवल देखा ही नहीं बल्कि उनसे नाता भी जुड़ गया। हम अति समीप हो गये, वो हमारा हो गया। वो हमारा परम मित्र बन गया। यदि आप चाहें तो हम आपका भी उनसे दिव्य मिलन करा सकते हैं।

प्रश्न: आप लोग सन्त-महात्माओं का सम्मेलन रखते हो। परन्तु ये तो कभी आपस में मिलते नहीं। इन सबकी विचारधाराएं अलग-अलग हैं, इनसे आप क्या अपेक्षाएं रख सकते हैं? वे संसार को कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं।

उत्तर: नहीं बन्धु...जो सन्त हैं वे अवश्य ही सांसारिक लोगों से श्रेष्ठ हैं। यह हो सकता है कि वे आपकी अपेक्षाओं पर खरे न उतरते हों परन्तु हैं तो वे महान ही। जिन्होंने थोड़ी भी पवित्रता अपनाई हो वे महान हैं। फिर उनका त्याग भी तो है। विचारों में मतभेद हो सकता है, परन्तु हमें उन्हें ईश्वरीय संदेश भी देना होता है। हमारा लक्ष्य ये भी है कि जिस लक्ष्य हेतु उन्होंने त्याग किया है उस परमात्म-मिलन की विधि वे परमात्म-ज्ञान द्वारा प्राप्त कर सकें। साथ-साथ इस महान ईश्वरीय कार्य में वे हमारे सहयोगी भी हैं व बन भी जाते हैं। हमें किसी की भी कमी नहीं देखना है, हमें तो उन्हें और ही समीप लाना है।

प्रश्न: आपके पास इतने सन्त आये, उनमें से कितनों ने भगवान को पहचाना...? मुझे तो नहीं लगता कि ऐसा कुछ हुआ है, क्योंकि इन विद्वानों में अहम् बहुत होता है।

उत्तर: आबू पावन तीर्थ एक ऐसी दिव्य भूमि है जहां आकर सभी का अहम् समाप्त हो जाता है। हमें एक भी संत से ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उनमें अहम् है। यहां हमने सभी को दिव्य व सौम्य स्वरूप में ही देखा। यहां उनके चेहरों पर शान्ति थी, प्रेम था, अपनत्व का भाव था व आनंद था। उनके कानों में ये महावाक्य पड़े कि ये ईश्वरीय कार्य मनुष्यों द्वारा संचालित नहीं है। उन्होंने सुना कि ब्रह्मा बाबा के तन में स्वयं निराकार, ज्ञान सागर, महाज्योति परमसत्ता, परम आत्मा ने प्रवेश करके ज्ञान दिया था। वही ज्ञान यहां दिया जा रहा है। यह जानकर कि अब भी उनका अवतरण होता है, उनमें से कइयों ने उनका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने की सच्चे दिल से इच्छा व्यक्त की।

प्रश्न: बाबा को मिलने के बाद मेरे जीवन में सुख-शांति आ गई। मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई। परंतु मेरे परिवार में अभी भी अशांति बनी रहती है, कोई न कोई विघ्न आते ही रहते हैं। मैं इनसे मुक्ति का उपाय जानना चाहता हूँ?

उत्तर: आप यदि अमृतवेले उठकर बहुत पावरफुल योग करेंगे तो आपके घर के अनेक विघ्न हट जायेंगे। घर को निर्विघ्न व सुख-शांति सम्पन्न बनाने के लिए घर के वायब्रेशन्स को खुशी व प्रेम से भरना आवश्यक है। जिस परिवार में खुशी व प्रेम होगा, वहां आपदाएं विपदाएं ठहरेंगी ही नहीं। खुशी के लिए एक ही बात करें कि किसी भी छोटी बात को तूल न दें। हर बात को हल्का करके जल्दी से जल्दी समाप्त किया करें। कुछ लोगों को आदत होती है बातों को लम्बा खींचने की, वे बातों को समाप्त करते ही नहीं। इससे सबकी खुशी नष्ट होती है। आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए सभी को इस नज़र से देखो कि ये सब आत्माएं देवकुल की महान् आत्माएं हैं।

घर निर्विघ्न रहे इसके लिए अपने घर में, दुकान में या ऑफिस में 5 बार बाप-दादा का आह्वान करें और यह फील करें कि बाप-दादा आपके घर में आ गये और उनके अंग-अंग से चारो ओर किरणें फैल रही हैं।

तीसरी बात - घर में तीन बार दस-दस मिनट बैठकर इस तरह से योग करो कि मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ और ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं, फिर वो पूरे घर में फैल रही है। ऐसा करना नियम बना लो तो विनाशकाल में भी सुखद अनुभव होंगे।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com